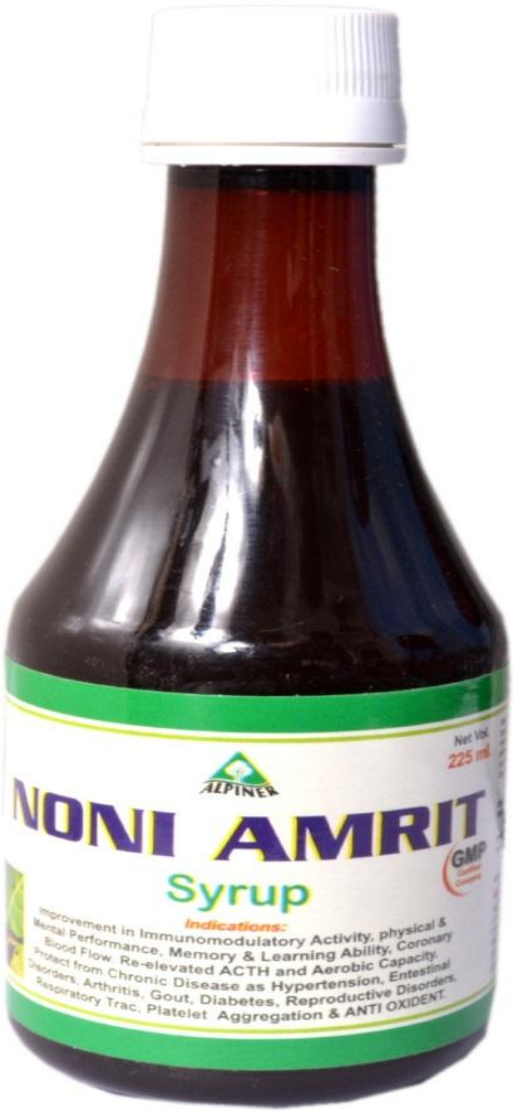

NONI AMRIT SYRUP

नोनी अमृत सिरप

औशधीय प्रमाणिक विवरण :

यह योग उत्तम जीवणीय द्रव्यों का मिश्रण होने के कारण बल, बुद्धि, ओज एवं आयु वर्धक है यह रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि कर सर्व रोग नाशक है। इसके उपयोग से 5000 प्लेटलेट्स (रक्तकणिका) प्रतिदिन बढ़वार होती है। शारीरिक विकास तथा याददास्त बढ़ाने के लिए परम महौषधी है।

प्रभावकारी वनौशधीयों का विवरण :

लक्ष्मणा जिनसेंग, नोनी, अमृता, शिलाजीत, जिंकोबिलोबा, अश्वगंधा, पुर्ननवा, हरड़, बहेड़ा, आंवला, भांखपुश्पी, ब्रह्मी, जीवन्ती, भयोनाक इन सभी वनौषधीयों को समकक्ष प्रभावकारी वनौषधीयों के क्वाथ/स्वरस के द्वारा भावित कराकर (फोर्टिफाइड) कर आयुर्वेदिक विधि विधान से योग निर्मित किया गया है।

औशधीय गुणधर्म :

सामान्यतया याददाश्त की कमजोरी, रोग प्रतिरोधक क्षमता का हास, जीर्ण रोगों से आयी कमजोरी, शारीरिक कृशता, अकारण हाथ पैरो का दुखना या सुन्न हो जाना, ह्दय रोग उच्च व न्यून रक्तचाप, अस्थिवात वात रोग, एनीमिया, मूत्रविकार, मधुमेह, श्वास रोग, यकृतविकार, आन्त्रविकार, डेंगू, संक्रमित ज्वर, कैंसर एवं एड्स जैसे जानलेवा रोग, असमय बालों का सफेद होना, त्वचागत झुर्रिया, बदरंगपन, शारीरिक बढ़वार का रूकना, स्त्री–पुरूषों में इन्द्रिय शिथलता, चयापच्य विकार, रस ग्रंथियों के रसों के अपघटन, स्त्रियों में रजो निवर्तीजन्य विकार आदि रोगों में शारीरिक रोग प्रतिरोधी क्षमता को क्रियाशील बनाकर जराव्याधि व जरामृत्यु रोग निवारण हेतू अद्भुत योग है।

जीर्ण रोग निवारण हेतु नोनी अमृत का उपयोग निम्न प्रकार से करें :–

⇒ ह्दय रोग में कार्डीजोल के साथ।

⇒ वातविकार रोग में ऑर्थोरेक्स के साथ।

⇒ उदर विकार में एसीडोल के साथ।

⇒ बवासीर रोग में पाइलोरेक्स के साथ।

⇒ स्त्री गुप्तांग रोगों में गायनेफोर्ट के साथ।

⇒ पुरूश गुप्तांग रोगों में लिबिडोन के साथ।

⇒ कैंसर रोग में कार्सीनोल के साथ।

⇒ भवास रोग में सायनोरेक्स के साथ।

⇒ भवेत प्रदर रोग में ल्यूकोरेक्स के साथ।

⇒ रक्त प्रदर में हेमोरेक्स के साथ।

⇒ भुकाणुओं की कमी में स्पर्मिन फोर्ट के साथ।

⇒ मिर्गी रोगों में हिस्टोनोर्म के साथ।

⇒ कैंश रोगों में वेलकेयर एक्स के साथ।

⇒ चर्म रोगों में ब्लेमीसोल के साथ।

⇒ मेद (मोटापा) रोगों में फैट–फ्री के साथ।

⇒ मधुमेह (भुगर) रोग में डायोकेयर के साथ।

⇒ पुरुशों के भुकाणु वर्धन हेतु स्पर्मिन फोर्ट के साथ।

⇒ भारीरिक एवं कद वृद्धि हेतु हाईट–अप के साथ।

⇒ अश्मरी (पथरी) रोग निवारण हेतु स्टोनेक्स के साथ।

⇒ पौरुश ग्रंथी (प्रोस्टेट ग्लैण्ड) वृद्धि रोग निवारण हेतु प्रोस्टोलिन के साथ।

⇒ उम्र (आयु) के हर पड़ाव पर सदैव जवान बनें रहना व सर्वरोग ***नाशन*** हेतु ***शिलाअमृत*** के साथ।

औशध सेवनकाल : 3–6 माह तक निरन्तर उपयोग करें।

मात्रा : व्यसक 2-2 चम्मच (10-10ml) प्रातः–सांय भोजन से पूर्व खाली पेट सेवन करें।

दुश्प्रभाव : कोई नही है।

निर्देश : **योग्य चिकित्सक की देखरेख में उपयोग करें।**